25 सशक्त महिलाएं

एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे

इन 25 सशक्त महिलाओं को सलाम

अगर सफल व प्रेरक महिलाओं की चर्चा की जाये तो उनके बारे में भी लिखना आवश्यक होगा जिन्होंने साधारण परिवेश में रहते हुए भी असाधारण उपलब्धियां हासिल की हैं। आज वे बेशक एक सशक्त मुकाम पर हैं, लेकिन उनकी सफलता की चमक के साथ-साथ जरूरी है उस संघर्ष का जिक्र भी जो इस स्थान तक पहुंचने के रास्ते में करना पड़ा है।

फेम इंडिया ने एशिया पोस्ट के साथ मिलकर समाज सेवा, खेल, पत्रकारिता, राजनीति, कला-संस्कृति, धर्म, नारी-सशक्तिकरण, नौकरशाही आदि कई क्षेत्रों की उन महिलाओं का सर्वे द्वारा चयन किया है जिन्होंने बीते बरस बदलाव में उल्लेखनीय भूमिका निभायी है। इस सूची में इंटरनेशनल वूमेन कांफ्रेंस की चेयरपर्सन और आर्ट आफ लिविंग की इंटरनेशनल स्प्रिच्युअल टीचर भानुमती नरसिम्हन, बैडमिंटन में विश्व की टॉप रैंकिंग में शामिल पी वी सिंधु, बीबीसी इंडिया में भारतीय भाषाओं की प्रमुख रुपा झा, हिमाचल प्रदेश में समाजसेवा के क्षेत्र में सक्रिय मल्लिका नड्डा, तृणमूल कांग्रेस सांसद महुआ मोइत्रा, महाराष्ट्र से निर्दलीय सांसद नवनीत राणा, दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष स्वाति मालीवाल, कला क्षेत्र की जानी-मानी रूहानी सिस्टर्स, एबीपी न्यूज की एंकर रुबिका लियाकत, वरिष्ठ आईआरएस ऑफिसर सीमा राज, राज्यसभा टीवी की बिजनेस जर्नलिस्ट सोनिया सिंह, कर्मठ आईएएस अधिकारी सोनल गोयल, प्रख्यात शिक्षा एवं संस्कृतिविद डॉ हेमलता एस मोहन, सुप्रीम कोर्ट की मजबूत छवि वाली वकील सीमा समृद्धि, देश की पहली नौसेना लेफ्टिनेंट शिवांगी, बाल कल्याण और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में कार्य रही डॉ बरखा वर्षा, भारतीय सेना की कैप्टन तानिया शेरगिल, परी (पीपुल्स अगेंस्ट रेप इन इंडिया) मूवमेंट की जनक योगिता भयाना, पटना नगर निगम की अपर आयुक्त शीला ईरानी, नाद फाउंडेशन की फाउंडर निशि सिंह, जल संरक्षण के क्षेत्र में कार्य करने वाली सारिका बहेती, मैथिली के पहले ई पेपर – ईसमाद की संपादक कुमुद सिंह, कवयित्री डॉ मानसी द्विवेदी और चिकित्सा, समाजसेवा और साहित्य से जुड़ी डॉ. शिखा रानी सर्वे में सामाजिक स्थिति, प्रभाव, प्रतिष्ठा, व्यवस्था पर प्रभाव, छवि, उद्देश्य और प्रयास जैसे दस मानदंडों को आधार बना कर किये गये स्टेकहोल्ड सर्वे में 25 अलग-अलग श्रेणियों में प्रमुख स्थान पर आयी हैं। ये वो नारियां हैं जिन्होंने अपनी मेहनत, लगन और सूझ-बूझ के दम पर कड़े संघर्षों से एक मुकाम हासिल किया है। फेम इंडिया-एशिया पोस्ट का इन तमाम सशक्त महिलाओं को सलाम है।

सशक्त महिलाएं

भानुमती नरसिम्हन

मुस्कान से मोक्ष की यात्रा से दुनिया को परिचित करवा रहीं है

"'सर्वे भवन्तु सुखिन' को जीवन का मूल मंत्र मानने वाली स्प्रिच्युअल लीडर भानुमती नरसिम्हन इंटरनेशनल मेडिटेशन टीचर हैं, जो भारत में बच्चों को मुफ्त शिक्षा प्रदान करने के लिए एक आंदोलन का नेतृत्व भी कर रही हैं। साथ ही जो लोग बाह्य और आंतरिक जीवन में संतुलन खोज रहे हैं, उनके लिए वे प्रेरणा का स्त्रोत भी हैं। आर्ट आफ लिविंग से जुड़े लोगों के बीच भानु दीदी के नाम से प्रसिद्ध भानुमती नरसिम्हन वैश्विक आध्यात्मिक गुरु एवं आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक गुरुदेव श्री श्री रविशंकर की छोटी बहन होने के साथ ही उनकी पहली अनुयायी भी हैं।"

भानुमती नरसिम्हन ने बैंगलोर विश्वविद्यालय से संस्कृत साहित्य में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की है। वे परिवार सहित बैंगलोर में रहती हैं परन्तु आध्यात्मिकता और ध्यान के गहन ज्ञान को साझा करने के लिए पूरी दुनिया में यात्रा करती हैं।

भानुमती नरसिम्हन आर्ट ऑफ लिविंग के बेहद प्रभावशाली मेडिटेशन कोर्स सहज समाधि ध्यान के माध्यम से विश्व भर में लोगों को तनाव और उससे संबंधित विकार से बचाने का प्रयास कर रही है। भानुमती नरसिम्हन के जीवन का उद्देश्य समाज को तनाव और हिंसा मुक्त बनाना है और वे निरंतर इस ओर प्रयासरत रहती हैं। वे आर्ट ऑफ लिविंग की महिला एवं बाल कल्याण कार्यक्रमों की प्रमुख हैं। विशेष रूप से, "गिफ्ट ए स्माइल प्रोजेक्ट" उनकी पहचान बन चुकी है। इस प्रोजेक्ट द्वारा वे संपूर्ण भारत में शिक्षा से वंचित बच्चों के लिए स्कूल चलती हैं। जिसमें देश भर के 22 राज्यों के 501 स्कूलों में 70160 से ज्यादा बच्चें मुफ्त शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

वे अंतर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन (आईडब्ल्यूसी) की अध्यक्षा भी है, जिसके द्वारा वे समाज में सकारात्मक परिवर्तन को प्रयासरत महिलाओं को वैश्विक स्तर पर कार्य करने को प्रेरित करती है। 110 देशों की विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिष्ठित एवं सशक्त 6000 से अधिक महिलाएं इस वैश्विक मंच आईडब्ल्यूसी से जुड़ी हुई है।

उन्होंने एक बायोग्राफी लिखी है, जिसका नाम "गुरुदेव: ऑन द प्लाटू ऑफ़्द पीक - द लाइफ ऑफ श्री श्री रवि शंकर" है। उन्होंने इसमें श्री श्री रविशंकर के रहस्यमय जीवन की बारीकी से व्याख्या की है। पुस्तक रिलीज होने के बाद से अमेज़ॅन पर बेस्ट सेलिंग किताबों की सूची में आ गई है। बचपन में उन्होंने कर्नाटक संगीत में प्रशिक्षण प्राप्त किया है और वेअच्छी गायिका हैं। विश्व भर में उनकी सुखद आवाज़ की प्रसिद्धि हैं। उन्होंने कई एल्बमों के माध्यम से पवित्र मंत्रों और आत्मपूर्ण भजनों को गाया है।

25

सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में भानुमती नरसिम्हन "प्रभावशाली" कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

सशक्त महिलाएं

पी.वी.सिंधु

पुरसला वेंकट सिंधु का जन्म 5 जुलाई, 1995 को हुआ. उनके पिता पी. वी. रमण और माँ पी. विजया दोनों ही पूर्व वॉलीबॉल खिलाड़ी हैं। वर्ष 2000 में उनके पिता पी. वी. रमण को उनके खेल के लिए अर्जुन अवार्ड से सम्मानित किया गया था। ज़ाहिर है घर में खेल का माहौल था जिसने सिंधु को भी आकर्षित किया लेकिन सिन्धु ने वॉलीबॉल ना चुनकर बैडमिंटन को चुना। इसके पीछे कारण थे पुलेला गोपीचंद। दरअसल साल 2001 में गोपीचंद ऑल इंग्लैंड ओपन बैडमिंटन चैंपियन बने थे। इनसे प्रभावित होकर सिंधु ने बैडमिंटन खेलने का फैसला किया और महज 8 साल की उम्र से ही बैडमिंटन खेलना शुरू कर दिया।

सिंधु ने बैडमिंटन सीखने की शुरुआत सिकंदराबाद में इंडियन रेलवे इंस्टिट्यूट ऑफ़सिग्नल इंजीनियरिंग एंड टेलीकम्युनिकेशन में महबूब अली की देखरेख में की। इसके बाद उन्होंने पुलेला गोपीचंद की बैडमिंटन अकादमी में दाखिला लिया। सिंधु कभी भी हार नहीं मानने वाली जुझारू खिलाड़ी हैं। वे आखिरी सेकंड तक प्रयास करती हैं. खेल के प्रति लगन और समर्पण इतना कि घर से 56 किलोमीटर दूर कोचिंग कैंप होने के बावजूद से रोज समय पर पहुँचती थीं।

राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा (राष्ट्रीय चैंपियन का खिताब) की चमक बिखेरने के बाद सिंधु ने वर्ष 2009 में सिंधु ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपने दमखम का परिचय दिया। पी.वी.सिंधु ने भारत का सिर अंतराष्ट्रीय स्तर पर ऊँचा किया और उन्होंने करोड़ों भारतीयों का दिल जीता। खेल में बेहतरीन प्रदर्शन के चलते पी.वी.सिंधु को राजीव गाँधी खेल रत्न अवार्ड और अर्जुन अवार्ड तथा देश के चौथे सबसे बड़े नागरिक सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। इसके अलावा भी कई अवार्ड सिंधु के नाम है।

संकल्प और समर्पण की मिसाल है

"भारत का नाम पूरे विश्व में रोशन करने वाली स्टार शटलर पी.वी. सिंधु खेल जगत का चमकता सितारा हैं. इनका पूरा नाम पुरसला वेंकट सिंधु है. विश्व वरीयता प्राप्त पी.वी. सिंधु भारत की ओर से ओलम्पिक खेलों में महिला एकल बैडमिंटन का रजत पदक जीतने वाली पहली खिलाड़ी हैं। साथ ही वे भारत की पांचवी ओलिंपिक मेडलिस्ट हैं। इससे पहले वे भारत की नेशनल चैम्पियन भी रह चुकी हैं। अपने कठिन परिश्रम और खेल के प्रति समर्पण से सिन्धु ने देश के सामने मिसाल पेश की है."

25 सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में पी.वी. सिंधु "कामयाब" कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

सशक्त महिलाएं

रूपा झा

रूपा ने वर्ष 2013 से दिल्ली में बीबीसी वर्ल्ड सर्विस में प्लानिंग और कमीशनिंग एडीटर के तौर पर दो वर्ष कार्य किया। इस दौरान वे बीबीसी हिंदी को लीड करती थीं, परन्तु बीबीसी अंग्रेजी की खबरों की भी जिम्मेदारी निभा रही थीं। उनसे देश भर के हिंदी और अंग्रेजी के रिपोर्टर जुड़े हुए थे। उनकी कार्यक्षमता को देखते हुए अक्टूबर 2015 में बीबीसी मीडिया ऐक्शन, नाइजीरिया में एक्जीक्यूटिव एडीटर की जिम्मेदारी दी गयी। इस एक वर्ष के कार्यकाल के दौरान इन्होंने संपादकीय और प्रोग्रामिंग के साथ अपनी मैनेजमेंट दक्षता का भी बेहतरीन प्रदर्शन किया। वहां वे अक्टूबर 2016 तक रहीं।

रूपा झा पिछले करीब तीन वर्षों से बीबीसी न्यूज दिल्ली में पदस्थापित हैं और यहां वे बीबीसी की हिंदी, तमिल, तेलुगू, मराठी, गुजराती और पंजाबी भाषा की प्रमुख हैं और बीबीसी की खबरों को जन भावना के अनुरूप और विश्वसनीय बनाने में इनकी प्रमुख भूमिका हो। बीबीसी न्यूज से देशभर में 200 से ज्यादा पत्रकार जुड़े हैं। रूपा झा ने अपनी नेतृत्व क्षमता से बीबीसी को हिंदी सहित भारतीय भाषाओं में सबसे विश्वसनीय और लोकप्रिय प्लेटफार्म बना दिया। उनकी इन उपलब्धियों के लिए उन्हें बीबीसी के "लीडर ऑफ़द ईयर" पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

रूपा झा का टीवी, रेडियो और डिजिटल मीडिया का महारथी माना जाता है। वे पत्रकारिता और संपादकीय मानकों पर मजबूत पकड़ रखती हैं और अपनी टीम को सदैव रचनात्मक और गतिशील रखती हैं। उनके सहयोगी उन्हें बेहद एनर्जेटिक और मोटिवेशनल मानते हैं। वे किसी दबाव और प्रभाव में आये बिना अपने दायित्वों और पाठकों, दर्शकों के प्रति पूर्ण समर्पित पत्रकार के तौर पर जानी जाती हैं। सोशल मीडिया पर सक्रिय रूपा झा अपनी बात मजबूती के साथ रखती हैं और खासी चर्चित रहती हैं।

भारतीय पत्रकारिता की सिरमौर पत्रकार

"छोटे से शहर से बड़े इरादे के साथ निकली रूपा झा आज देश के प्रख्यात पत्रकारों में शामिल हैं। वे वर्तमान में बीबीसी वर्ल्ड सर्विस, बीबीसी न्यूज की भारतीय भाषाओं की प्रमुख हैं।पत्रकारिता में करीब 20 साल का अनुभव रखने वाली रूपा बिहार के पटना की रहने वाली हैं। वे हिंदी, अंग्रेजी समेत कई अन्य भाषाओं की भी अच्छी जानकार हैं। दिल्ली में अपने करियर की शुरुआत करने के बाद उन्होंने इन बीस वर्षों में विभिन्न पदों पर कार्य किया।"

25

सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में रूपा झा "अनुभवी" कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

सशक्त महिलाएं

कंगना रनौत

रचनात्मक और अभिनय का बेहतरीन संगम

"कंगना रनौत एक ऐसी अभिनेत्री हैं जिन्हें कम उम्र में बड़े कमाल दिखाने वाली माना जाता है। महज चौदह साल के फिल्मी करीयर में उन्होंने तीन राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों और चार फिल्मफेयर पुरस्कारों सहित कई पुरस्कार प्राप्त किये हैं। फोर्ब्स इंडिया की सौ सेलिब्रिटी की सूची में उन्हें छह बार जगह मिली है। वर्ष 2020 में भारत सरकार ने उन्हें पद्म श्री से भी सम्मानित किया है।"

कंगना रनौत का जन्म 23 मार्च 1987 को हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले के एक छोटे से कस्बे भाम्बला (अब सूरजपुर) में एक राजपूत परिवार में हुआ था। उनकी माँ आशा रनौत एक स्कूल टीचर हैं और पिता अमरदीप रनौत एक व्यापारी हैं। उनके पड़दादा सरजू सिंह रनौत विधान सभा सदस्य थे और उनके दादा भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी थे। भांबला में उनके परिवार को संपन्न व संभ्रांत परिवारों में गिना जाता था।

कंगना रनौत के माता-पिता की इच्छा उन्हें डॉक्टरी पढ़ाने की थी, लेकिन उनकी खुद की मंजिल कुछ और थी। वे सोलह वर्ष की आयु में दिल्ली आ गयीं, जहाँ वह कुछ दिन मॉडलिंग भी की। उन्हें प्रशंसा तो मिली, लेकिन मन कुछ क्रियेटिव करने का था, सो थिएटर निर्देशक अरविंद गौड़ के प्रशिक्षण के बाद वर्ष 2006 की थ्रिलर 'गैंगस्टर' से फिल्मों की शुरुआत की। अपनी पहली फिल्म में ही उन्हें फिल्मफेयर अवॉर्ड मिला। फिर तो फिल्मों की झड़ी लग गयी। वर्ष 2008 में आयी फिल्म फैशन के लिये उन्होंने राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी जीता। बाद में उन्हें कई अन्य पुरस्कार मिले।

कंगना रनौत ने व्यावसायिक रूप से सफल और अभिनय प्रधान दोनों तरह की फिल्मों में सशक्त भूमिकाएं निभायी हैं। कुछ बॉक्स ऑफिस पर बेहद सफल रहीं तो कुछ केवल खास दर्शकों द्वारा ही पसंद की गयीं। 'तनु वेड्स मनु', इसके सीक्वल और 'क्वीन' के अलावे 'क्रिस-3' में उनकी भूमिकाओं ने जहां दर्शकों के साथ-साथ पुरस्कार देने वालों का भी ध्यान आकर्षित किया वहीं बायोपिक 'मणिकर्णिका: द क्वीन ऑफ झांसी' में उनके निर्देशन व अभिनय को वर्षों तक याद रखा जायेगा।

फिल्मों के अलावे भी कंगना रनौत एक बेहद रचनात्मक व्यक्तित्व की स्वामी हैं और उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय ब्रांड वेरो मोडा के लिए अपनी खुद की कपड़ों की सीरीज लॉन्च की है। वे एक बेबाक नारी हैं और सच्चाई के लिये किसी से भी टकराने से पीछे नहीं हटीं।

25

सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में कंगना रनौत "प्रतिभाशाली" कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

सशक्त महिलाएं

मल्लिका नड्डा

चेतना के जरिए समाज विकास में सक्रिय

"दिव्यांग बच्चों और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में बेहतरीन कार्य कर रही डॉ. मल्लिका एक बेहतरीन वक्ता भी हैं। "बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ" पर इनके कार्य और 2015 में दिये गये भाषण की चर्चा देश भर में आज तक है। ये हिमाचल प्रदेश की प्रसिद्ध समाजिक संस्था "चेतना" की संस्थापक हैं। पेशे से शिक्षाविद डॉ मल्लिका नड्डा हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में इतिहास की प्रोफेसर हैं। वर्तमान में दिल्ली में द इंटरनेशनल सेंटर फॉर डिस्टेंस एजुकेशन एंड लर्निंग (आईसीडीईओएल) में प्रतिनियुक्ति पर हैं।"

मध्य प्रदेश के जबलपुर के प्रतिष्ठित राजनीतिक परिवार में मल्लिका का जन्म 8 मार्च 1964 में हुआ। इनके पिता सुभाष चन्द्र बैनर्जी और मां जयश्री बैनर्जी का जबलपुर में खासा प्रभाव रहा है। डॉ. मल्लिका नड्डा की मां जयश्री बैनर्जी 13वीं लोकसभा में जबलपुर से सांसद रही हैं। इससे पूर्व वे 1977, 1990 और 1993 में मध्य प्रदेश में जबलपुर विधानसभा के लिए निर्वाचित हो चुकी हैं। वे 1977 से 1980 के बीच प्रदेश में बनने वाली गैर कांग्रेसी सरकार में केंदीय मंत्री भी रही हैं।

मल्लिका नड्डा ने जबलपुर के प्रतिष्ठित सेंट जोसेफ कन्वेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल से स्कूलिंग करने के बाद रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय से स्नातक की पढ़ाई पूरी की। शुरुआत से ही समाजसेवा में सक्रिय रहीं डॉ मल्लिका छात्र राजनीति से भी जुड़ी रही हैं। वे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की 1988 से 1990 तक नेशनल जेनरल सेक्रेटरी भी रही हैं।

डॉ मल्लिका नड्डा शिक्षाविद, समाजसेवी के साथ पत्नी और मां की भूमिका भी बखूबी निभाती हैं। वे अपने समाजसेवा के कार्यों की वजह से हर क्षेत्र की महिलाओं के लिए प्रेरणास्रोत हैं। वे "चेतना" के अलावा भी विभिन्न संस्थाओं के साथ बिलासपुर, शिमला और दिल्ली आदि में समाजसेवा का अनेकों कार्य कर रही हैं।

दिव्यांग बच्चों, महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में किये गये कार्यों के लिए डॉ. मल्लिका नड्डा को 2010 में राजीव गांधी मानव सेवा अवार्ड, डेरोजिओ अवार्ड सहित अनेकों राष्ट्रीय, अंतराष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित किया गया है।

25

सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में डॉ मल्लिका नड्डा "सक्रिय" कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

सशक्त महिलाएं

नवनीत राणा

असरदार वक्ता हैं निर्दलीय सांसद

> 17वीं लोकसभा में जहां पूरे देश में मोदी लहर चल रही थी, वहीं महाराष्ट्र के अमरावती से एक निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर संसद पहुंचने वाली नवनीत राणा ने सबको चौंका दिया। उनकी जीत इसलिये भी महत्त्वपूर्ण है कि पिछले चुनाव में वे एनसीपी प्रत्याशी के तौर पर चुनाव हार चुकी थीं। साफ है कि ये जीत पूरी तरह उनके व्यक्तित्व, जनसंपर्क और समाजसेवा को समर्पित रही।

नवनीत राणा 3 जनवरी 1986 को मुंबई में जन्मीं और वहीं पली बढ़ी हैं। उनके पिता सेना में अधिकारी थे और उनका परिवार मूलतः पंजाबी है। वे मुंबई के कार्तिक हाई स्कूल से पढ़ीं और 12 वीं पास करने के बाद पढ़ाई छोड़ कर मॉडलिंग की दुनिया में कदम रखा। उन्होंने म्यूजिक एल्बमों, कन्नड़ फिल्म, तेलुगु फिल्म, हिन्दी फिल्म के अलावे तमिल, मलयालम और पंजाबी आदि भाषाओं की फिल्मों में अपने अभिनय का लोहा मनवाया है।

2 फरवरी 2011 को नवनीत कौर ने महाराष्ट्र के बड़नेरा से विधायक रवि राणा के साथ विवाह कर लिया। राजनीति और ग्लैमर के इस संगम को सांसद राणा ने सामूहिक विवाह समारोह बना दिया जिसमें करीब 3000 जोड़ों ने शादियां कीं। इस शादी को लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में भी दुनिया के सबसे बड़े विवाह समारोह के तौर पर जगह मिली। इस शादी समारोह में विवाह के बंधन में बंधे जोड़ों में 350 जोड़े नेत्रहीन और 470 जोड़े शारीरिक रूप से विकलांग लोगों का था।

वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में उन्हें एनसीपी ने टिकट दिया, लेकिन वे सफलता नहीं पा सकीं। उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और क्षेत्र की जनता के लगातार संपर्क में रहीं। उनकी इसी मेहनत का नतीजा रहा कि वर्ष 2019 के चुनाव में उन्होंने बतौर निर्दलीय प्रत्याशी, शिवसेना के दिग्गज माने जाने वाले आनंदराव अड़सुल को हरा कर इतिहास रच दिया। जब उन्हें पहली सैलरी मिली तो उन्होंने पूरी रकम मुख्यमंत्री राहत कोष में सूखा पीड़ितों के लिये दान कर दिया। उन्होंने समाजसेवा और जनसंपर्क अभियान को सांसद बनने के बाद भी नहीं छोड़ा है और अपने कार्यों से लोगों के और करीब हो रही हैं।

25

सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में नवनीत राणा "असरदार" कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

सशक्त महिलाएं

महुआ मोइत्रा

5 मई 1975 को कोलकाता के एक संपन्न ब्राह्मण परिवार में जन्मी महुआ मोइत्रा की स्कूली शिक्षा वहीं से हुई और बाद में उन्होंनें माउंट होलीक कॉलेज, साउथ हैडली, मैसाचुसेट्स, संयुक्त राज्य अमेरिका से अर्थशास्त्र और गणित में स्नातक किया। वे उच्च शिक्षा प्राप्त कर नौकरी करने डेनमार्क गयीं तो उन्होंने अपने करीयर की शुरुआत मशहूर कंपनी जेपी मॉरगन से एक इनवेस्टमेंट बैंकर के तौर पर की। अपनी योग्यता के दम पर वे कंपनी के वाइस प्रेसिडेंट के पद तक पहुंची।

वर्ष 2008 में महुआ मोइत्रा भारत लौट आयीं और समाजसेवा को अपना लक्ष्य बनाया। उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत वर्ष 2009 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के राजनेता के तौर पर की। ममता बनर्जी से मिलने के बाद वे तृणमूल कांग्रेस में शामिल हो गयीं और अपने तेज तर्रार, ओजस्वी भाषणों के कारण वे जल्दी ही काफी लोकप्रिय हो गयीं।

महुआ मोइत्रा ने अपने जीवन का पहला चुनाव वर्ष 2016 में पश्चिम बंगाल के करीमपुर विधानसभा के लिये लड़ा। वे चुनाव जितने के बाद से पश्चिम बंगाल विधान सभा की एक बहुत ही सक्षम और मजबूत विधायक के रूप में विख्यात रहीं। वर्ष 2019 में 17 वीं लोकसभा के चुनाव में पार्टी ने उन्हें पश्चिम बंगाल के कृष्णानगर से लड़वाया। देश भर में मोदी लहर के बावजूद उन्होंने भाजपा प्रत्याशी को लगभग 63 हजार वोटों से हराया।

अंदाजे बयां की कुछ और है इनका

“महुआ मोइत्रा के पहले भाषण से ही काफी लोकप्रियता हासिल कर ली। लोकसभा में विपक्षी दल तृणमूल कांग्रेस का होने के बावजूद उन्होंने अपने अकाट्य तर्कों और बोलने की अपनी विशेष शैली से सत्ता और विपक्ष दोनों ही नेताओं से प्रशंसा हासिल की है। लोकसभा के नव निर्वाचित सांसदों में वह सबसे प्रतिभाशाली मानी जाती हैं। इससे पहले भी उनकी छवि पश्चिम बंगाल के एक जुझारू राजनेता की रही है।”

25

सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में महुआ मोइत्रा “बेजोड़” कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

सशक्त महिलाएं

स्वाति मालीवाल

कर्मठता से पहचान बनाने में कामयाब रहीं हैं

कम उम्र में ही संघर्षों से वास्ता और फिर सफलता और फिर संघर्ष। यही कहानी है दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष स्वाति मालीवाल की। वे इस पद पर पहुंचने वाली सबसे कम उम्र की महिला हैं।

दिल्ली से सटे उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद के एक संपन्न परिवार में 15 अक्टूबर 1984 को जन्मी स्वाति मालीवाल ने अपनी स्कूली शिक्षा नोएडा के अमिटी स्कूल से प्राप्त की। इसके बाद वे नोएडा के ही जेएसएस कॉलेज से इंजीनियरिंग की तकनीकी डिग्री हासिल की। अच्छी नौकरी भी मिली, लेकिन जब अन्ना हजारे ने दिल्ली में आंदोलन शुरू किया तो स्वाति ने सबकुछ छोड़ कूद पड़ीं।

अपनी बेहद शानदार नौकरी छोड़कर उन्होंने बतौर आरटीआई कार्यकर्ता समाज सेवा को अपना करियर चुना। 'इंडिया अगेंस्ट करप्शन' की सबसे युवा सदस्य के रूप में काम कर चुकीं स्वाति वर्ष 2006 से ही अरविंद केजरीवाल के साथ जुड़ी हुई हैं।

आम आदमी पार्टी की जब दिल्ली में 2015 में सरकार बनी तो अरविंद केजरीवाल ने स्वाति मालीवाल को बड़ी जिम्मेदारी दी। उसी साल जुलाई में उन्हें दिल्ली महिला आयोग का चेयरमैन बना दिया गया। वर्ष 2018 में उनका टर्म और तीन साल के लिये बढ़ा दिया गया। दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष बनाये जाने से पहले स्वाति मालीवाल दिल्ली के मुख्यमंत्री की शिकायत सलाहकार थीं।

स्वाति मालीवाल ने जब महिला आयोग का कार्यभार संभाला तो उन्हें पता चला कि राजधानी की कई कॉलोनियों में जगह-जगह मसाज पार्लरों, स्पा सेंटरों और हेल्थ क्लबों के नाम पर अनैतिक देह व्यापार के अड्डे चल रहे हैं। उन्होंने पाया कि कई जगह इन अड्डों को पुलिस के भ्रष्ट अधिकारियों का भी संरक्षण हासिल है। उन्होंने इन अड्डों पर छापेमारी के लिये व्यापक अभियान छेड़ा। वे कई बार महिलाओं से जुड़े मसलों को लेकर धरने पर भी बैठ चुकी हैं। हाल ही में वे नाबालिगों के साथ दुष्कर्म के दोषियों को जल्द से जल्द फांसी देने की मांग को लेकर दिल्ली के राजघाट पर धरने पर बैठी थीं।

25

सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में स्वाती मालीवाल "कर्मठ" कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

सशक्त महिलाएं

रूहानी सिस्टर्स

रूह तक पहुंचती है आवाज इनकी

"आजा वे तेनु अंखिया... " शीर्षक की सूफी गजल ने भले ही पाकिस्तानी गायक नुसरत फतेह अली की आवाज में अपनी पहचान बनायी हो, लेकिन आज की महफिलों में इसे रुहानी सिस्टर्स के नाम से ही सुना जाता है। वास्तव में इनका नाम हैं डॉ. जागृति लूथरा प्रसन्ना और डॉ. नीता पांडे नेगी। सूफी जुगलबंदी की ये जोड़ी रूहानी सिस्टर्स के नाम से मशहूर हैं। इस जोड़ी में दोनों ही गायिकाएं युवा हैं और समान रूप से प्रतिभाशाली भी हैं। दोनों ने सूफी संगीत में अपनी पहचान बनाने से पहले इसके बारे में अच्छी तरह अध्ययन किया है और दिल्ली विश्वविद्यालय से रिसर्च भी किया है।"

दोनों ही गायिकाएं संगीत की सूफी परंपरा में पूरा विश्वास रखती हैं। रूहानी सिस्टर्स दो समान रूप से प्रतिभाशाली कलाकारों का एक सुंदर मिश्रण हैं, जो एक-दूसरे के बराबर तो हैं ही, एक दूसरे की पूरक भी हैं। दोनों एक ही समय में गायन की अलग-अलग शैलियों के साथ एक-दूसरे की ऐसी जुगलबंदी पेश करती हैं कि सुनने वाले मंत्रमुग्ध रह जाते हैं। जब वे गाती हैं, तो श्रोता निश्चित रूप से जान जाते हैं कि ये रूहानी बहनें ही हैं। एक और बात जो उन्हें दूसरे गायकों से अलग बनाती है वह यह है कि अपनी शानदार आवाज के अलावा, वे अपने गीतों को खुद ही लिखती भी हैं।

दोनों को दिल्ली विश्वविद्यालय से सूफी संगीत में डॉक्टरेट की उपाधि हासिल है। रूहानी सिस्टर्स ने ढाका, चटगांव, बांग्लादेश, अजमेर, राजस्थान में अंतर्राष्ट्रीय सूफी महोत्सव, हरिद्वार में महाकुंभ और नोएडा लोक मंच में अंतर्राष्ट्रीय सूफी और लोक उत्सव के अलावा भी कई अन्य बड़े मंचों पर अपनी कला का प्रदर्शन किया है।

रूहानी सिस्टर्स अपनी बुलंद आवाज में सही ताल और अपनी खनकती आवाज़ से सूफी संगीत के जरिये लोगों की रूह को छू लेती हैं। "शाहों में शाह, मर्दों में मर्द है, वलियों में वली है, उसका नाम वली है..." जैसी प्रचलित कव्वालियों को दोनों इतनी मौलिकता से पेश करती हैं कि वो श्रोताओं को नयी लगने लगती है। डॉ. जागृति और डॉ. नीता भले ही सगी बहनें ना हों, लेकिन सूफी संगीत के लिए उनके प्यार ने उन्हें एक साथ रूह से जोड़ दिया है और एक साथ एक मंच पर ला खड़ा किया है। इसीलिए इन रूहानी सिस्टर्स को 'द फीमेल वॉयस ऑफ सूफीज्म' कहते हैं।

25

सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में रूहानी सिस्टर्स "उत्कृष्ट" कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

सशक्त महिलाएं

रुबिका लियाकत

साफगोई की एक मिसाल है

"एबीपी न्यूज की स्टार पत्रकार रुबिका लियाकत हिम्मत और साफगोई की एक ऐसी मिसाल हैं जिनके आगे बड़े-बड़े राजनेता भी बिना तथ्यों के बोलने की हिम्मत नहीं जुटा पाते।"

रुबिका लियाकत का जन्म 18 अप्रैल को उदयपुर, राजस्थान में एक उदारवादी मुस्लिम परिवार हुआ था जहां लड़कियों की शिक्षा को खासा महत्त्व दिया जाता है। उन्होंने प्राथमिक स्कूली शिक्षा उदयपुर के सेंट ग्रेगोरीयस सीनियर सेकेंडरी स्कूल से प्राप्त की और पत्रकारिता में ग्रेजुएशन की डिग्री प्राप्त की। उसके बाद रुबिका आगे की पढ़ाई पूरी करने के लिये मुंबई विश्वविद्यालय गयीं।

वर्ष 2007 में, रुबिका ने चैनल लाइव इंडिया के साथ एक न्यूज एंकर के रूप में अपने पत्रकारिता करियर की शुरुआत की। सितंबर 2008 तक वहां कार्य करने के बाद वे न्यूज 24 में एंकर और वरिष्ठ संवाददाता के रूप में शामिल हुईं। इसके बाद, वे एक एंकर के रूप में ज़ी न्यूज से जुड़ गयीं जहां सीनीयर एंकर और संपादक के रूप में भी कार्य किया। ज़ी न्यूज में बतौर एंकर उन्होंने एक बेबाक शो 'ताल ठोंक के' की मेजबानी की जिससे उन्हें काफी लोकप्रियता और प्रसिद्धि मिली। अगस्त 2018 में रुबिका ने ज़ी न्यूज से इस्तीफा दिया और एबीपी न्यूज नेटवर्क में शामिल हो गयीं। एबीपी न्यूज में, वे सोमवार से शुक्रवार तक रात 9 बजे प्राइम-टाइम शो 'मास्टर्स स्ट्रोक' की मेजबानी कर रही है। इस शो में वे न सिर्फ राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय और शोध आधारित रिपोर्ट्स को प्रसारित करती है बल्कि कई गंभीर और विवादित मुद्दों पर खुल के बहस भी करती हैं। वे सभी धर्मों के रूढ़िवादी और प्रगतिशीलता विरोधी तत्वों के साथ जोरदार बहस कर उन्हें आइना दिखाने के लिए प्रसिद्ध है।

25

सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में रूबिका लियाकत "विलक्षण" कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

सशक्त महिलाएं

सीमा राज

सुलझी हुई आईआरएस अधिकारी हैं

“यूं तो बहुत सी महिलाएं बड़े पदों पर कार्यरत हैं, परन्तु एक समय पर विभिन्न दायित्वों का बेहतर निर्वहन ही प्रधान आयकर आयुक्त सीमा राज को सशक्त सिद्ध करता है। उन्होंने अबतक 32 साल के कार्यकाल में सहायक आयकर आयुक्त से लेकर प्रधान आयकर आयुक्त तक की जिम्मेदारी बेहतर तरीके से निभाई है। सीमा राज की गिनती देश के ईमानदार और सुलझी हुई आईआरएस आफिसर्स में होती है। वे 1988 में यूपीएससी के द्वारा भारतीय राजस्व सेवा (आईआरएस) के लिए चुनी गई।”

उन्होंने अपनी हर पोस्टिंग में अपनी काबिलियत साबित की है। वर्ष 1997-98 यूरिया स्कैम में कर निर्धारण का मामला हो या वर्ष 2012-13 में ग्वालियर में आयकर आयुक्त के तौर पर 200 प्रतिशत से ज्यादा रिकार्ड टैक्स कलेक्शन करवाना उनके आदर्श कार्यशैली की मिसाल रही है। वर्ष 2010-12 और 2014-17 में आयकर आयुक्त (अपील) के तौर पर बीएसएनएल, बीएसईएस आदि के जटिल अपील का निर्णय भारत सरकार के हित में लेना उनकी मजबूत इच्छाशक्ति का परिचय देता है। 2005-10 के बीच एचआरडी मिनिस्ट्री में डायरेक्टर के तौर पर पोस्टिंग के दौरान कई नए आईआईटी, ट्रीपल आईआईटी, एनआईटी के निर्माण का खाका इन्होने ही तैयार किया।

झारखंड के जमशेदपुर स्थित ननिहाल में जन्मी सीमा राज उच्च मध्यमवर्गीय पंजाबी खत्री परिवार से है। पिता मिलिट्री इंजीनियरिंग सर्विसेज में थे और उन्होंने सीमा राज को हमेशा आगे बढ़ने को प्रेरित किया। पिता की ट्रांसफर समय समय पर होने के कारण उनकी पढ़ाई कई शहरों में हुई। वे शुरू से ही मेधावी रही हैं। उन्होंने बीएससी में गोल्ड मेडल प्राप्त करने के साथ ही एमएससी, एलएलबी और एमबीए की डिग्री भी प्राप्त किया है। वे वर्तमान में आईआईटी, दिल्ली से पीएचडी भी कर रहीं हैं।

उनके पति डॉ उदित राज देश के नामी दलित राजनेता हैं, जिन्होंने आईआरएस सर्विसेज से इस्तीफा दे समाज उत्थान और नवचेतना में अपना जीवन समर्पित कर दिया है। सीमा राज चर्चित प्रिंसिपल कमिश्नर, इंकमटैक्स होने के साथ ही समाजिक सहभागिता के लिए समय निकलती है। वे समाज सेवा के भी कई कार्य कर रही है। दलित, आदिवासी और वंचितों के कल्याण कार्यों में भागीदारी निभाती है। उन्होंने गुरुग्राम के सरस्वती कुंज सोसायटी के लोगों को भू माफियाओं से मुक्ति दिलाने में बड़ी भूमिका निभाई। उन्हें विभिन्न समाजिक संगठनों ने समय समय पर सम्मानित किया है। मां और पत्नी का दायित्व भी वे बेहतर तरीके से निभाने के लिए जानी जाती है।

सशक्त महिला की सबसे बड़ी खासियत है वो एक साथ कई फ्रंट पर बेहतर कर समाज में प्रेरणास्रोत होती है।

25

सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में सीमा राज “योग्य” कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

सशक्त महिलाएं

सोनिया सिंह

बिजनेस जर्नलिज्म की ग्लैमर्स क्वीन

देश की नामी गिरामी बिजनेस वूमेन जर्नलिस्ट में एक सशक्त नाम सोनिया सिंह का भी है। करीब बीस सालों से टीवी जर्नलिज्म से जुड़ी सोनिया वर्तमान में राज्यसभा टीवी के पॉलिटिकल और बिजनेस शोज होस्ट कर रहीं हैं। उनका खास कार्यक्रम 'अर्थनीति' अपनी विशेषता के लिये जाना जाता है। सोनिया सिंह अपने न्यूज प्रेजेंटेशन के साथ ही अपने स्मार्ट लुक को लेकर भी हमेशा चर्चा में रहीं हैं।

मूल रूप से दिल्ली की रहने वाली सोनिया सिंह एक एमबीए डिग्री धारक हैं और व्यापार व बाजार की अच्छी समझ रखती हैं। वर्ष 2000 में उन्होंने अपने कैरियर की शुरुआत 'जी न्यूज' से मीडिया इंटर्न के तौर पर की। बाद में वे 'आजतक' के साथ जुड़ी और ग्राउंड रिपोर्टिंग से शुरुआत की। उनकी गिनती तेजतर्रार पत्रकारों में की जाती है। वे देश की पहली महिला पत्रकार थीं जिन्होंने ऑटोमोबाइल इंडस्ट्रीज की खबरों पर एक अलग कार्यक्रम की शुरुआत की। सोनिया सिंह आजतक के लिए एंकरिंग करने के साथ ही ऑटोमोबाइल प्रोग्राम को भी कवर कर रही थीं। इनका कार्यक्रम 'चक्के पे चक्का' काफी लोकप्रिय रहा। सोनिया सियोल मोटर शो, पैरिस मोटर शो, जिनेवा मोटर शो आदि के अलावे विदेशों में 'आजतक' के लिये कई बड़े न्यूज इवेंट की कवरेज भी कर चुकी हैं। वे एंकर और डिप्टी एडिटर के पद पर लंबे समय तक आजतक से जुड़ी रहीं और आजतक में बिजनेस ब्यूरो की जिम्मेदारी संभाल रही थीं। वर्ष 2012 में उन्होंने हायर स्टडीज के लिए आजतक छोड़ा। आजतक छोड़ने के बाद वे फ्री लांसर के तौर पर विभिन्न प्लेटफॉर्मों के लिये लिखती रहीं। द क्विंट और यूसी न्यूज जैसे डिजिटल प्लेटफार्मों पर उनके बिजनेस, करेंट अफेयर्स, स्पोर्ट्स और इंटरटेनमेंट से जुड़े आर्टिकल पाठकों के बीच खाये लोकप्रिय रहे। सोनिया सिंह कुछ वर्षों से राज्यसभा टीवी से जुड़ी हैं, जहां उन्होंने हिंदी बिजनेस शो 'अर्थनीति' की शुरुआत की। जल्दी ही ये प्रोग्राम देश भर में लोगों को व्यापार, उद्योग और वाणिज्य को लेकर सही व सटीक जानकारी देने वाला लोकप्रिय शो बन गया है।

सोनिया सिंह सोशल मीडिया पर भी बेहद सक्रिय हैं और ट्विटर व फेसबुक पर समाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर अपनी राय बेबाकी से रखती हैं जहां उनकी फैन फौलोविंग काफी अच्छी है।

25

सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में सोनिया सिंह "क्षमतावान" कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

सशक्त महिलाएं

सोनल गोयल

उत्कृष्ट प्रशासनिक क्षमता की धनी ऊर्जावान ब्यूरोक्रेट

वर्ष 2008 बैच की आईएएस सोनल गोयल पानीपत, हरियाणा के उच्चमध्यम वर्गीय परिवार से हैं। पिता चार्टर्ड एकाउंटेंट है और उन्होंने हमेशा अपनी बेटियों को बेहतर करने के लिए प्रेरित किया। सोनल का सपना शुरू से ही देश के विकास में अपना योगदान देने का था और आज ये विकास कार्यों में अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभा रही हैं। सोनल गोयल त्रिपुरा कैडर की आईएएस अधिकारी हैं और वर्तमान में डेपुटेशन पर हरियाणा कैडर में है। ये इस समय गुरुग्राम में सीईओ जीएमसीबीएल और एडिशनल सीईओ जीएमडीए के पद पर पदस्थापित हैं।

सोनल गोयल ने देश के विकास में अपनी भूमिका निभाने के मकसद से ब्यूरोक्रेसी में जाने का निर्णय लिया और आज मजबूत हौसले के साथ अपना योगदान दे रही हैं। इन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित श्री राम कालेज आफ कामर्स से वर्ष 2003 में बी काम (आनर्स) किया है। इस दौरान ये सिविल सर्विसेज के बारे में अवगत हुई। ग्रेजुएशन के बाद इन्होंने 2004 में कंपनी सेक्रेटरीशिप में सफलता पाई। 2004 में दिल्ली विश्वविद्यालय में एलएलबी में एडमिशन लेने के साथ ही कंपनी सेक्रेटरी के तौर पर पार्ट टाइम जॉब भी शुरू किया। ये पब्लिक पालिसी में एमए भी है।

सोनल गोयल ने यूपीएससी, सिविल सर्विसेज 2008 बैच की परीक्षा में पुरे देश में 13वां स्थान हासिल किया। ट्रेनिंग के बाद पहली पोस्टिंग एसिस्टेंट कलक्टर के तौर पर त्रिपुरा में हुई। शुरुआती कार्यकाल से ही इन्होंने अपनी प्रशासनिक क्षमता को साबित किया। कलेक्टर साउथ त्रिपुरा, चीफ एक्जीक्यूटिव आफिसर अगरतला म्युनिसिपल काउंसिल, ज्वाइंट सेक्रेटरी लेबर डिपार्टमेंट, प्रोजेक्ट डायरेक्टर सर्व शिक्षा अभियान हो या जिलाधिकारी गोमती जिला का पद सोनल गोयल जहां भी रही इन्होंने वहां ब्यूरोक्रेसी और ब्युरोक्रेट्स के लिए लोगों के दिल में सम्मान बढ़ाया। इनके कार्यकालों के दौरान विकास कार्यों में तेजी आई।

सोनल गोयल जहां भी रही इन्होंने अपने उत्कृष्ठ प्रशासनिक क्षमता, जनोपयोगी कार्ययोजना और शानदार कार्यशैली की मिसाल कायम की।

वर्ष 2018 में झज्जर जिले की डिप्टी कमिश्नर का कार्यकाल हो या कमिश्नर, फरीदाबाद म्युनिसिपल कारपोरेशन और फरीदाबाद स्मार्ट सिटी की सीईओ के तौर पर पदस्थापना, इनका कार्यकाल हमेशा अच्छा रहा है।

वर्ष 2012 में इनके नेतृत्व में अगरतला म्युनिसिपल काउंसिल को बेस्ट बीएसयूपी सिटी अवार्ड मिला। इन्होने गोमती जिले की कायापलट कर दी और हर क्षेत्र में जिले को अव्वल श्रेणी में लाने में कामयाब रही। गोमती जिले की जिलाधिकारी के तौर पर वर्ष 2015-16 में केंद्र सरकार के आधा दर्जन से ज्यादा मंत्रालयों ने इन्हे सम्मानित किया। सितंबर 2016 में नीति आयोग, युनाइटेड नेशन्स और माय गोव की टॉप 25 वीमेन ट्रांस्फोर्मिंग इंडिया की सूची में इन्हे शामिल किया। वर्ष 2019 में महिला एवं बाल विकास मंत्रालय और ट्विटर इंडिया ने इन्हे बेस्ट वेब वंडर विमेन के खिताब से भी सम्मानित किया है।

25

सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में सोनल गोयल "ऊर्जावान" कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

सशक्त महिलाएं

डॉ. हेमलता एस.मोहन

हेमलता स्टील सिटी बोकारो की स्टील वुमेन के तौर पर भी जानी जाती हैं। शिक्षा को संस्कृति के साथ जोड़ने के लिए उन्होंने अनथक प्रयत्न किया जिसमें ''जॉय ऑव गिविंग '' की उनकी संकल्पना शामिल रही है।

वे शास्त्रीय संगीत में सीनियर डिप्लोमा प्राप्त हैं। उनके लिखे गीत '' होगा कल सुनहरा '', ' बढ़ता जा तू ' बच्चों में काफी लोकप्रिय है ।

डॉ. हेमलता एस मोहन का जन्म उत्तर प्रदेश के मऊनाथ भंजन में हुआ। इन्होने बनारस विश्वविद्यालय से बीएससी,एलएलबी एवं काशी विद्यापीठ से पीएचडी की पढ़ाई पूरी की है। 38 वर्षों तक शिक्षा के क्षेत्र से जुड़ी रही डॉ. हेमलता को राष्ट्रपति के हाथों उत्कृष्ट शिक्षक के अलावा शिक्षण एवं समाज में सराहनीय कार्यों के लिये कई संस्थानों के द्वारा सम्मान प्रदान किया गया है। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में कई अभिनव प्रयोग किये हैं जिसमें संस्कृति को शिक्षा से जोड़ना प्रमुख रहा है।

राजनीति को वे सामाजिक बदलाव का प्रभावी माध्यम मानती हैं। राज्य महिला आयोग की प्रमुख के तौर पर डॉ हेमलता एस मोहन ने वर्ष 2010-2013 के दौरान बखूबी अपने दायित्व का निर्वहन किया। वे झालसा की सदस्य भी रही हैं । अभी बतौर सीसीआरटी, नई दिल्ली की अध्यक्ष वे संस्कृति को शिक्षा के माध्यम से हर विद्यालय तक पहुँचाने के लिए प्रयत्नशील हैं । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह हर राज्य में एक सीसीआरटी केंद्र खोलने के लिए प्रयत्नशील हैं ।

शिक्षा को सशक्त समाज की बुनियाद मानती

"सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय की भावना से ओत-प्रोत डॉ. हेमलता एस मोहन वर्तमान में भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अधीन सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र (सीसीआरटी) की अध्यक्ष हैं। डॉ. हेमलता ने शिक्षा , संस्कृति ,शिक्षा-संस्कृति प्रशिक्षण , महिला सशक्तिकरण और समाज सेवा को अपने जीवन का ध्येय बनाया हुआ है । उन्होंने बोकारो जैसी जगह को स्कूली शिक्षा के केंद्र के रूप में विकसित करने में सर्वोत्तम योगदान दिया है ।"

25

सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में डॉ. हेमलता एस.मोहन "आदर्श" कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है ।

सशक्त महिलाएं

सीमा समृद्धि

मजलूमों की सशक्त आवाज

"अपने छोटे से करीयर में ही देश के सर्वाधिक चर्चित वकीलों में अपना नाम शुमार कर चुकीं सीमा समृद्धि अब किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। बहुचर्चित निर्भया गैंग रेप के अपराधियों को फांसी दिलवाने के लिए दिन-रात एक कर देने वाली सीमा वर्तमान में सुप्रीम कोर्ट और दिल्ली हाईकोर्ट में अधिवक्ता हैं। वे बचपन से ही बेहद मेधावी थीं। उन्होंने राजनीति-शास्त्र में पीजी करने के अलावे मास कम्युनिकेशन (जर्नलिज्म) का कोर्स भी किया है। शुरू से ही समाजसेवा और सुधार के क्षेत्रों में बहुत कुछ करना चाहती थीं, इसलिए इन्होंने एलएलबी की डिग्री हासिल की।"

उत्तर प्रदेश के इटावा के चंबल क्षेत्र के एक मध्यमवर्गीय परिवार में 2 अक्टूबर 1986 को जन्मी सीमा बचपन से ही बड़े लक्ष्यों वाली और जुझारू स्वभाव की रही हैं। चंबल जैसे दुर्गम, असुरक्षित और दकियानूसी क्षेत्र में रहने के बावजूद उन्होंने उस माहौल में भी कई-कई किलोमीटर दूर जा कर अपनी माध्यमिक शिक्षा पूरी की। पिता का सहयोग उन्हें हमेशा मिला। उनके पिता क्षेत्र में प्रभाव रखने वाले ग्राम-प्रधान थे।

सीमा समृद्धि ने वर्ष 2006 में लॉ की डिग्री प्राप्त करने के बाद वर्ष 2007 में इलाहाबाद हाईकोर्ट से वकालत की शुरूआत की। वे वास्तव में सिविल सर्विसेज में जाना चाहती थीं, लेकिन यूपीएससी द्वारा वर्ष 2011 में पाठ्यक्रम में अचानक किये गये बदलाव ने उनकी तैयारियों पर विपरीत असर डाला। वे इस बदलाव के विरुद्ध चले आंदोलन की अगुवा भी रही हैं। समाज के विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे अन्याय को देखते हुए इन्होंने वकालत के जरिये ही गरीबों और मजलूमों को न्याय दिलाने का मार्ग चुना। वर्ष 2012 में निर्भया के साथ हुए घिनौने अपराध ने उन्हें अंदर तक झकझोर दिया। उन्होंने तब ही निर्धारित कर लिया था कि निर्भया के दरिंदों को फाँसी के फंदे तक पहुँचा कर रहेंगी। इंदिरा गांधी को अपना आदर्श मानने वाली सीमा समृद्धि राजनीति में आ कर बड़े नेतृत्व को निभाने की भी तैयारी में हैं। वे राजनीति को समाज में बदलाव का सशक्त माध्यम मानती हैं। वर्तमान में सीमा 'निर्भया ज्योति ट्रस्ट' व 'महात्मा ज्योतिबा फुले बिग्रेड' की लीगल एडवाइजर हैं। समाजसेवी के रूप में सीमा सैकड़ों लोगों की मदद कर रही है जिनमें रेप, घरेलू हिंसा की शिकार महिलाएं ज्यादा हैं। वे देश भर के कई ऐसे मामलों में वकील हैं।

25

सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में सीमा समृद्धि "कर्त्तव्यनिष्ठ" कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

सशक्त महिलाएं

कैप्टन तानिया शेरगिल

मीडिया व सोशल मीडिया पर महिला सशक्तिकरण का पर्याय और अन्य के लिए प्रेरणास्रोत बन गयीं कैप्टन तानिया शेरगिल का परिवार लगातार चार पीढ़ियों से भारतीय सेना की सेवा में है।

उन्होंने भी इस गौरवशाली परिवारिक परंपरा को आगे बढ़ा कर अपने पूर्वजों का नाम रोशन किया है। पंजाब के होशियारपुर में गढ़दीवाला के करीबी गांव पंडोरी अटवाल का मूल निवासी उनका परिवार पिछले करीब 50 साल से अधिक से मुंबई के पोवई में रहा है। तानिया शेरगिल की प्रारंभिक शिक्षा पोवई स्थित केंद्रीय विद्यालय से हुई है। उन्होंने नागपुर से इलेक्ट्रॉनिक्स और कम्युनिकेशन में इंजीनियरिंग की पढ़ाई की और बीटेक करने के बाद सेना में भर्ती होने का फैसला किया। उन्हें चेन्नई की ऑफिसर्स ट्रेनिंग अकादमी से 2017 में कमीशन मिला था। उनके पिता सूरत सिंह सेना में 101 फील्ड रेजीमेंट (सेल्फ प्रोपेल्ड) में 10 साल तक कप्तान के पद पर सेवा करने के बाद सीआरपीएफ में शामिल हुए और बतौर कमांडेंट रिटायर हुए। इस दौरान उन्हें बहादुरी के लिए राष्ट्रपति पदक भी मिल चुका है। उनकी मां लखविंदर कौर बतौर अध्यापिका मुंबई से ही रिटायर हुई हैं। दोनों ने अपनी मिट्टी की ओर रुख करते हुए गढ़दीवाला कस्बे में अपना घर बनाया है और आज कल वहीं रह रहे हैं।

तानिया शेरगिल के दादा हरि सिंह सेना के 14वीं आर्म्ड रेजीमेंट यानी 14 सिंध हॉर्स में सिपाही थे। उनके परदादा ईशर सिंह इंफैंट्री सिख रेजिमेंट के 26 पंजाबी बटालियन में सिपाही थे। उन्होंने प्रथम विश्व युद्ध में भाग लिया था जिसके लिए उन्हें सेवा मेडल व सर्विस स्टार से नवाजा गया था।

कैप्टन तानिया शेरगिल की उपलब्धि से प्रेरणा पा कर देश की बहुत सी लड़कियां भारतीय सेना में जाने को उत्साहित हैं।

महिला सशक्तिकरण का पर्याय

“कैप्टन तानिया शेरगिल देश की महिला शौर्य का प्रतीक बन तब सबके सामने आयीं जब देश के 71वें गणतंत्र दिवस के मौके पर राजपथ पर परेड एडजुटेंट के तौर पर उन्हें सेना की एक टुकड़ी की कमान संभालने का मौका मिला और उन्होंने इतिहास रच दिया। वे इस गौरवशाली पद पर पहुंचने वाली पहली महिला अधिकारी हैं। इसके कुछ ही दिनों पहले 15 जनवरी को भी उन्होंने एक इतिहास बनाया जब सेना दिवस के परेड का नेतृत्व करने वाली पहली महिला अधिकारी बनीं।”

25

सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में कैप्टन तान्या शेरगिल “प्रेरक” कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

सशक्त महिलाएं

डॉ बरखा वर्षा

दुनिया भर में बाल कल्याण के मुहिम में जुटी

"एक छोटी कोशिश कितनों को खुशी और जीने का मकसद प्रदान कर सकती है , इसे चरितार्थ किया है बरखा वर्षा ने। एक प्रयास जो नेक भावना से शुरू हुई थी और आज एक बड़ी मुहिम बन गई है । डॉ बरखा वर्षा ने 23 वर्ष पूर्व दो गरीब बच्चों को शिक्षित करने का प्रयास शुरू किया और अब हजारों गरीब, वंचित और विकलांग बच्चों के शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए काम कर रही हैं।"

अमेरिका के किंग्स यूनिवर्सिटी से डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त डॉ बरखा वर्षा अभिज्ञान फाउंडेशन की संस्थापक है। यह संस्था भारत ही नहीं दुनियां के कई हिस्सों में शिक्षा, स्वास्थ्य और वंचितों के लिए कार्य कर रही हैं। अभिज्ञान फाउंडेशन के विश्व भर में 33 सेंटर है, जो 6400 से अधिक बच्चों के जीवन में मुस्कान का माध्यम बन चुका है । लखनऊ के उच्चवर्गीय परिवार में जन्मी बरखा के पिता क्लास वन आफिसर और मां चर्चित सितार वादक थी। उन्होंने गढ़वाल यूनिवर्सिटी से पीजी करने के बाद ओस्मानिया यूनिवर्सिटी हैदराबाद से एमबीए पब्लिक रिलेशन और एमसीए भी किया। समाज के लिए कार्य करने की भावना हमेशा से बरखा के अंदर पारिवारिक संस्कार से ही आई।

वे भूटान, अफ़गानिस्तान, नेपाल, तुर्की सहित दुनिया के कई देशों में लोगों मूल अधिकारों के लिए काम कर रही है। अफ़गानिस्तान में उन्होंने दुर्गम स्थानों पर जाकर स्थानीय लोगों की मदद से कई स्कूलों और अनाथालयों का निर्माण किया है। अफ़गानिस्तान में ही 100 से अधिक महिलाओं को वर्कशॉप देकर इन्होने मील का पत्थर स्थापित किया, वहीं तुर्की में सीरिया से आये 1000 रेफ्यूजी बच्चों के लिए शेल्टर होम बनाने के साथ ही उनकी शिक्षा की व्यवस्था पर काम कर रही हैं।

वे यूनेस्को और यूनाइटेड रिलिजियस इनिशिएटिव, यूएन, सैन फ्रांसिस्को की सदस्य हैं। जिसके द्वारा वे दुनिया भर में भारतीय शास्त्रीय संगीत और संस्कृति को बढ़ावा देने के साथ ही शांति निर्माण पर काम भी कर रही हैं।

जब कोई समाज , देश और वंचितों के लिए कार्य करता है तो समाज उसकी उत्कृष्टता को सम्मानित अवश्य करता है, डॉ बरखा वर्षा को समाज सेवा के क्षेत्र में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय के 20 से अधिक सम्मान प्राप्त है। जिसमें इंपावरिंग विमेन अवार्ड 2017, बेस्ट एनजीओ अवार्ड 2017, राजीव गांधी एक्सीलेंस अवार्ड 2017, विमेन आफ द फ्यूचर अवार्ड 2018, इंडियन आइकॉन अवार्ड 2018, महात्मा गांधी पीस अवार्ड 2019, साइनिंग विमेन अवार्ड 2019 आदि प्रमुख हैं।

25

सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में डॉ बरखा वर्षा "सरोकार" कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है ।

सशक्त महिलाएं

महिला सुरक्षा को जीवन का लक्ष्य बना चुकी है

ज्यादातर लोग अपने लिए पर कुछ खास लोग दुसरों के लिए अपना जीवन समर्पित कर देते हैं, योगिता भयाना उनमें से एक है। योगिता एक जानी मानी हास्पिटलिटी प्रोफेशनल रहीं है, लेकिन जिन्होंने समाज सुधार के कार्य के लिए अपनी हाईप्रोफाइल जिंदगी छोड़ दी। वे डिजास्टर मैनेजमेंट में पीजी है और पिछले 13 वर्षों से समाजिक विकास, महिला सशक्तिकरण, लैंगिक समानता कार्य कर रही है।

योगिता भयाना

दिल्ली ही नहीं देश भर के दिल को दहला देने वाली निर्भया गैंग रेप की विभस्त घटना ने इनके मन मस्तिष्क पर बड़ा प्रभाव छोड़ा और उन्होंने महिलाओं की सुरक्षा को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। वे एक ओर निर्भया के गुनाहगारों के विरुद्ध निर्भया के परिवार और रेप पीड़ित परिवारो के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी है, वहीं देश भर में महिला सुरक्षा के लिए लोगों को जागरूक करने में उन्होंने दिन रात एक कर दिया है।

योगिता भयाना ने महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य से सितंबर 2007 में उत्थान नाम से कार्यक्रम शुरु किया, जिसमें महिलाओं खास कर अकेली, तालाकशुदा और विधवा महिलाओं को मजबूत करने के लिए हर संभव मदद किया जाता है। उन्होंने सितंबर 2009 में युथ के नाम से एक प्रोजेक्ट शुरू किया, जिसका मकसद युवा इंटरप्रेन्योरशिप को बढ़ावा देना है। योगिता और उनकी टीम ने कई आपदा और विभिषिका प्रभावित क्षेत्रों में बेहतरीन कार्य किया है। दिल्ली बम ब्लास्ट और लद्दाख में बाढ़ के समय इनके बचाव और पुनर्वास के प्रयास को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सराहना मिली। उन्होने दिल्ली के अलावा कई राज्यों से लापता लड़के लड़कियों को भिखारी गैंग और सेक्स रैकेट से रेस्क्यू कर बचाया है और उन्हे परिवार से मिलने में महत्ती भूमिका निभाई है।

उन्होंने 2014 में "निर्भया वाक" का आयोजन किया था। वे महिला और बाल यौन शोषण के पीड़ितों और उनके परिवार को हर संभव सहायता कर रहीं हैं। वे उन्हें चिकित्सकीय सहायता, पुलिस कोर्डिनेशन, ज्युडिशियल ट्राइल, आर्थिक सहायता के अलावा काउंसिलिंग भी करती है। उन्होंने पीड़ित परिवारों का एक ग्रुप बनाया है, जहां वे अपने दर्द आपस में बांट सकें और एक दुसरे को इन मुसीबतों से निकलने का ढाढस और हिम्मत दें।

वे विभिन्न संस्थाओं जैसे नेशनल वीमेन काउंसिल, पूर्व उपाध्यक्ष, उत्तराखंड राज्य महिला सशक्तिकरण परिषद, उत्तराखंड सरकार, दिल्ली सरकार के रोगी कल्याण समिति, दिल्ली विधिक सेवा के यौन शोषण बोर्ड की सदस्य रहीं हैं। योगिता भयाना देश भर में महिला सुरक्षा के लिए "परी' (पीपल अगेंस्ट रेप्स इन इंडिया) नाम की एक बड़ी मुहिम चला रही है। यह रेप विक्टिम के लिए देश की सोच बदलने का मजबूत प्रयास माना जा रहा हैं।

25

सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में योगिता भयाना "जागरूक" कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

FAME INDIA

सशक्त महिलाएं

लेफ्टिनेंट शिवांगी

युवाओं को प्रेरित करती पहली महिला पायलट

“समंदर को हमेशा से ही एक ऐसी जगह माना जाता है जहां केवल पुरुषों का ही दबदबा कायम है, लेकिन एक युवती ने अपने हौसले के दम पर इस क्षेत्र में भी अपने कदम जमाये हैं। बतौर पायलट सब-लेफ्टिनेंट शिवांगी स्वरूप ने जब नेवी ज्वाइन की तो उन्होंने एक इतिहास रच दिया। उन्हें कमीशंड ऑफिसर का ओहदा प्राप्त है और वे नेवी की पहली महिला पायलट हैं।”

बतौर पायलट सब-लेफ्टिनेंट शिवांगी डॉर्नियर सर्विलांस एयरक्राफ्ट उड़ा रही हैं। इस समय वे केरल के कोच्चि स्थित सदर्न नेवल कमांड में तैनात हैं। ट्रेनिंग पूरी करने के बाद दिसंबर 2019 में उन्हें नेवी में बतौर पायलट तैनाती मिली।

बिहार के मुजफ्फरपुर जिले में पारू कस्बे की रहने वाली शिवांगी स्वरूप के पिता हरिभूषण सिंह सरकारी स्कूल में अध्यापक रहे हैं। शिवांगी की प्रारंभिक शिक्षा मुजफ्फरपुर के डीएवी पब्लिक स्कूल में हुई। एक साधारण परिवार से होने पर भी नन्हीं शिवांगी के हौसले बुलंद थे। उसने बचपन में अपने खेतों का पास हेलिकॉप्टर उतरते देख कर ही तय कर लिया कि पायलट बनना है। जब वे सिक्किम मणिपाल में इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने गयीं तो उनके कॉलेज में एक नौसेना के अधिकारी आये। प्रभावित होकर शिवांगी ने उनसे अपने भविष्य की चर्चा की और वहीं उन्हें आगे बढ़ने का रास्ता मिल गया। नौसेना अधिकारी ने विभागीय भर्ती परीक्षा की विस्तृत जानकारी दी और शिवांगी ने भी इसके लिये पूरी तैयारी कर पहले अटेंप्ट में ही सफलता हासिल कर ली। शिवांगी के माता पिता ने उन्हें हमेशा सपोर्ट किया और कभी पीछे हटने नहीं दिया, हर कदम पर उसका साथ दिया। शिवांगी ने एमटेक की पढ़ाई के लिये ऐडमिशन भी लिया लेकिन इसी दौरान उनका सेलेक्शन एसएसबी में हो गया। सब लेफ्टिनेंट के तौर पर सेलेक्ट हुई शिवांगी ने ट्रेनिंग पूरी की और इसके बाद पहली महिला पायलट के रूप में उनका सेलेक्शन हुआ। शिवांगी, जून 2017 में वाइस एडमिरल एके चावला के नेतृत्व में औपचारिक तौर पर नेवी में कमीशंड हुई थीं। वे नेवी में फिक्स्ड विंग एयरक्राफ्ट पायलट हैं।

शिवांगी उस डॉर्नियर सर्विलांस एयरक्राफ्ट की पायलट है जिसे कम दूरी के समुद्री मिशन पर भेजा जाता है। एयरक्राफ्ट में एडवांस सर्विलांस, रडार, नेटवर्किंग और इलेक्ट्रॉनिक सेंसर लगे होते हैं। शिवांगी स्वरूप देश के करोड़ों युवाओं, खासकर लड़कियों के लिये एक प्रेरणास्रोत बन कर उभरी हैं।

25

सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में लेफ्टिनेंट शिवांगी “चर्चित” कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

सशक्त महिलाएं

शीला ईरानी

हौसले से भरी पुलिस अधिकारी

"साधारणतया किसी राज्य में पुलिस सेवा के अधिकारी को प्रशासनिक सेवा में तभी लिया जाता है जब उसकी कार्यशैली से राज्य के प्रमुख प्रभावित हों। पटना शहर को स्वच्छ और अतिक्रमण मुक्त बनाने की कमान संभाल रहीं अपर नगर आयुक्त शीला ईरानी पुलिस सर्विसेज से हैं और 2018 में यहां हुई पोस्टिंग से पहले बीएमपी-01 में अवर पुलिस अधीक्षक के पद पर थीं।"

माना जाता है कि इनकी कार्यकुशलता और मजबूत छवि के कारण बिहार के मुख्यमंत्री ने राजधानी को स्मार्ट सिटी के तौर पर स्वच्छ, अतिक्रमण-मुक्त, अवैध निर्माण पर रोक आदि कार्यों के सुचारू संचालन के लिये शीला ईरानी पर विश्वास किया। शीला पटना नगर निगम में नियुक्ति के साथ ही शहर को स्वच्छ रखने और यातायात सुगम करवाने को लेकर प्रयासरत हैं। डोर टू डोर कचरा संग्रहण की बेहतर व्यवस्था को शुरू करवाने के साथ ही वे सड़क पर कचरा फेंकने वालों पर भी सख्त कार्रवाई के लिए चर्चित हैं।

लेडी सिंघम के नाम से पटना में फेमस शीला ईरानी अवैध कब्जा करने वाले बड़े से बड़े माफियाओं पर कार्रवाई से नहीं घबरातीं।

शीला ईरानी का जन्म एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। पिता ज्वाइंट लेबर कमिश्नर थे और उन्होंने हमेशा अपने बच्चों को उच्च मानवीय मूल्यों की शिक्षा दी। शीला की स्कूलिंग गिरिडीह के कार्मेल स्कूल से हुई और उन्होंने पटना वीमेंस कॉलेज से ग्रेजुएशन किया। वर्ष 2000 में ये पुलिस सर्विसेज में आ गयीं। एसपी रैंक की अधिकारी शीला पटना की ट्रैफिक डीएसपी, टाऊन डीएसपी के पोस्टिंग के दौरान अपनी कड़क और ईमानदार छवि के लिए मशहूर रही है। वर्ष 2013 में शीला ईरानी बिहार की पहली महिला पुलिस अधिकारी बनीं जिन्होंने स्वतंत्रता दिवस पर गांधी मैदान में परेड का नेतृत्व किया। अपने विशिष्ट कार्यों के लिये शीला ईरानी को इंटरनल सिक्योरिटी अवॉर्ड और क्राइम कंट्रोल के लिए डीजीपी से प्रशस्ति पत्र भी प्राप्त हो चुका है। अपने बीस साल के कार्यकाल में उन्होने अपनी मजबूत कार्यशैली, ईमानदारी और कड़क छवि की छाप छोड़ी है।

25

सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में शीला ईरानी "हौसला" कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है ।

सशक्त महिलाएं

निशि सिंह

संगीत, कला और लेखन के साथ समाज सुधार का अनोखा संगम

"सरल हृदय और भावुक मन का बेजोड़ संगम है निशि सिंह। वे सिंगर, कॉलमनिस्ट, पेंटर और एंकर के साथ ही समाजसेवा के क्षेत्र में भी काम कर रही है। वे बेहतरीन गायिका होने के साथ ही अपनी कूची से कैनवास पर विभिन्न रंग उकेरने वाली चर्चित पेंटर भी है। नाद फाउंडेशन की फाउंडर निशि ने गंधर्व महाविद्यालय से संगीत की शिक्षा पाई है।"

निशि सिंह अपना गुरु पंडित ज्वाला प्रसाद को मानती है। भजन, ग़ज़ल, सूफ़ी संगीत के अलावा निशि हिंदी गाने की भी माहिर कलाकार है। 2019 में टी-सिरीज द्वारा रिलीज उनकी एल्बम " मेरा दिल " बेहद हिट रही।

निशि सिंह ने देश भर में कई बड़े कार्यक्रम में अपनी गायकी से शमां बिखेरी है। जिसमें ताज महोत्सव, रोज फेस्टिवल, एनजेडसीसी फेस्टिवल, कुंभ मेले जैसे बड़े कार्यक्रमों में इनके परफॉर्मेंस की बहुत तारीफ हुई। वे हिंदी के अलावा अन्य भाषाओं में भी गाती है। पंजाबी में उनकी एक एल्बम जल्दी ही रिलीज होने वाली है। नाद फाउंडेशन के द्वारा वे कलाकारों को देश विदेश में एक बड़ा मंच उपलब्ध करवाती है। जिसकी वजह से देश के कई युवा कलाकारों की प्रतिभा को सामने आने और निखरने का मौका मिला है।

निशि ने प्रसिद्ध लेडी श्रीराम कालेज से ग्रेजुएशन करने के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय से एलएलबी की डिग्री प्राप्त की। इनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि संपन्न रही है, पिता उत्तर प्रदेश कैडर के सिनियर ब्यूरोक्रेट रहे हैं।

एक कॉलमनिस्ट के तौर पर उनके आलेख देश विदेश की पत्र पत्रिकाओं में छपते रहते है। उन्होने नेशनल एक्सप्रेस के साथ मिल कर देश भर की वीमेन अचीवर्स पर कई स्टोरी और शोज किया है, जो चर्चित रहा है।

निशि की पहचान एक पेंटर के तौर पर भी है। उनकी पेंटिंग्स देश में प्रतिष्ठित प्रदर्शनियों में बहुत सराही गई है। वे अपनी पेंटिंग से होने वाली कमाई को भी समाज सेवा के कार्य में लगाती है। वे समाज सेविका के तौर पर अपनी संस्था नाद फाउंडेशन के द्वारा पिछड़े और गरीब परिवार के बच्चों को मुफ्त पढ़ाने, इंट्रेंस एक्जाम के लिए फ्री कोचिंग की सुविधा उपलब्ध करवाती है। वे नेत्रहीन बच्चों के लिए भी कई बड़े कार्य कर रहीं हैं।

25 सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में निशि सिंह "कलात्मक" कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

सशक्त महिलाएं

सारिका बहेती

दिल्ली के एक उच्चवर्गीय परिवार में जन्मी सारिका ने क्वीन मेरी स्कूल से पढ़ने के बाद दिल्ली युनिवर्सिटी से स्नातक किया है। इंगलैंड के नैशनल कंप्युटिंग सेंटर से डिप्लोमा प्राप्त सारिका ने साउथ दिल्ली पॉलीटेक्निक से एडवरटाइजिंग, मार्केटिंग और पीआर में भी सर्टिफिकेट हासिल किया है। शुरूआती दौर से ही वे ट्रेवल, एडवेंचर के साथ एंवायरमेंट और सोशल डेवलपमेंट को लेकर उत्साहित रही हैं।

वर्ष 1991 में शादी के बाद ये वेक्टस ग्रुप की डायरेक्टर बनायी गयीं। मेटल और केमिकल के उत्पादन में एक मुकाम हासिल कर चुकी वेक्टस इंडस्ट्रीज लिमिटेड को शीर्ष पर पहुंचाने में इन्होनें अपने पति आशीष बहेती के कंधे से कंधा मिलाकर हर जिम्मेदारी को कुशलता पूर्वक निभाया। उन्होंने प्रोफेशनल लाइफ और पर्सनल लाइफ दोनों में बेहतरीन सामंजस्य बना कर रखा। सारिका ने अध्यात्मिक और भौतिक जीवन में सामंजस्य बिठाने के लिए विपश्यना के साथ ही प्राकृतिक चिकित्सा और योग के कई कोर्स किये है ।

उन्होंने 2011 में "नीरांजलि" के नाम से एक गैर सरकारी संस्था यानी एनपीओ की स्थापना की है जो मूलतः जल संरक्षण, पर्यावरण संतुलन और समाज कल्याण आदि के क्षेत्रों में कार्य करती है। सारिका एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था एनपीओ 'फाउंडेशन फॉर ए ड्रग-फ्री वर्ल्ड' से भी जुड़ी हैं जो विश्व भर में लोगों को शराब और नशीले पदार्थों की लत के हानिकारक प्रभावों से अवगत कराने के साथ ही नशा मुक्ति के लिए भी कार्यरत हैं। वे 2011 में भारत के पहले फॉर्मूला-1 मार्शल, ग्रैंड प्रिक्स में चयनित होने वाली पहली भारतीय महिला भी हैं।

उनके समाज के उत्थान के प्रति समर्पण और अथक प्रयास के लिए समय समय पर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कारों से सम्मानित भी किया गया है।

नीरांजलि द्वारा जल और पर्यावरण संरक्षण को समर्पित

"पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक कल्याण और नशा मुक्ति के क्षेत्र में कार्य कर रही सारिका बहेती एक सफल एंटरप्रेन्योर रही हैं। समाजिक संस्था 'नीरांजलि' की फाउंडर चेयरमैन सारिका जल संरक्षण आदि अपने कार्यो के लिए जानी जाती हैं। उन्हें वर्ष 2018 में नारी रत्न पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है।"

25

सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में सारिका बहेती "सुधारवादी" कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है ।

सशक्त महिलाएं

डॉ. मानसी द्विवेदी

डॉ. मानसी द्विवेदी अयोध्या के मिल्कीपुर तहसील के छोटे से गांव से ताल्लुक रखती हैं। उनके पिता पण्डित खुशी राम दुबे एक रचनाकार के साथ ही अध्यापक थे। सीमित संसाधनों में भी उन्होंने अपने बच्चों को उच्च संस्कार और बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न बनाया। बचपन से ही मानसी को कविताएं लिखने का शौक था। उनका पहला काव्य संग्रह 2005 में प्रकाशित हुआ, जब वो बी एड की छात्रा थीं। तीन विषयों में पोस्ट ग्रेजुएट मानसी ने एम एड और पीएचडी भी किया है। 2009 में श्रावस्ती जनपद में बेसिक शिक्षा विभाग में उनकी नियुक्ति हुई। मानसी ने दो शैक्षणिक पुस्तकें "शिक्षा मनोविज्ञान" एवम "सांख्यिकी" लिखी है।

"मैंने देखा ही नहीं पांव के छालों की तरफ़. और संघर्ष ने सौ बार सफलता दे दी" जैसी तमाम प्रेरक पंक्तियों को लिखने वाली डॉ. मानसी द्विवेदी खेल, गायन, नृत्य, लेखन, अध्यापन, गृह कार्य जैसी कलाओं से भी निपुण हैं। उनका काव्यसंग्रह " दरकती दीवार" बेहद चर्चित रहा है। उन्हें उनकी रचना के लिए कई संस्था ने सम्मानित किया है जिनमें उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा दिया गया "डॉ. रांगेय राघव सम्मान" भी शामिल है। देश - विदेश के प्रतिष्ठित साहित्यिक कार्यक्रमों में डॉ. मानसी द्विवेदी को काव्य पाठ के लिए बुलाया जाता है। वे कुशल मंच संचालिका और उदघोषिका भी हैं। महाकुम्भ -प्रयागराज और दीपोत्सव-अयोध्या जैसे अति विशाल मंच के संचालन के लिए उन्हें आमंत्रित किया गया।

जीवन के थपेड़ों से कभी नहीं घबराने वाली मानसी एक कुशल मां और कर्तव्यनिष्ठ बेटी का दायित्व भी सकुशलता से निभा रहीं हैं। इनकी गिनती देश की चोटी की वरेण्य कवयित्री के तौर पर होती है।

कविताओं से लोगों के अंतर्मन को झकझोर देती

"कवि की कविता ही उसकी पहचान होती है, डॉ.मानसी की कविताएं उनके जीवन के संघर्ष से सफलता तक को दर्शाती हैं। एक ओर वे कभी अपनी कविताओं से युवाओं को उत्साहित करती हैं तो कभी उनकी कविताएं नारी पीड़ा का अहसास कराती हैं। कहीं उनकी कविताएं संबल और उर्जा से भरी होती हैं तो कभी सर्वहारा पर आधारित होती है।"

25

सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में डॉ. मानसी द्विवेदी "लोकप्रिय" कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

सशक्त महिलाएं

कुमुद सिंह

कुमुद सिंह की पहचान एक महिला पत्रकार के रूप में है, जो अपनी तमाम जिम्मेदारियों को निभाती हुई अपनी पत्रकारिता से न सिर्फ समाज में फैली कुरीतियों और भ्रांतियों पर चोट करती रहती हैं, बल्कि नारी सशक्तिकरण के लिए लगातार प्रयासरत हैं। उनकी पत्रकारिता न तो किसी 'वाद' या 'धारा' से प्रभावित है और न ही उनकी पत्रकारिता किसी पूर्वाग्रह से ग्रसित है। यही वजह है कि राजनैतिक मुद्दों पर उनकी कलम कभी मोदी तो किसी दूसरे मुद्दे पर केजरीवाल, कांग्रेस या शिवसेना को समर्थन या विरोध करती दिख जाती है। हालांकि उनकी कलम अधिकांश समय राजनीतिक मुद्दों से हट कर मिथिला की सभ्यता-संस्कृति और संस्कार को लोगों के सामने लाने एवं उसे संरक्षित करने के लिए ही चलती है। इसके साथ ही वह महिला सशक्तिकरण पर भी अपने विचार मजबूती से रखती हैं। एक ओर वह बेबाक राय के लिए जानी जाती हैं वहीं दुनिया भर में ई-समाद के जरिए मैथिली को सहज सुलभ बनाने में भी महती भूमिका निभा रही है।

एक पत्रकार की हैसियत से कुमुद सिंह ने 'ईसमाद' के नाम को स्थापित पत्रों की सूची में शामिल कराने के साथ पाठकों के एक बड़े वर्ग को तैयार किया। पत्रकारिता के साथ उन्होने प्रकाशन के क्षेत्र में भी कदम रखा और वहां भी 'ईसमाद' को विशिष्ट पहचान दिलायी। इनके दिशा-निर्देशन में 'ईसमाद' ने छह किंडल किताबों के साथ दो पेपरबैक किताबों का प्रकाशन किया। इनमें से अधिकांश किताबों ने काफी प्रसिद्धि पायी।

बिहार की राजधानी पटना में रहने वाली कुमुद सिंह का जन्म शंकरपुर इस्टेट में 11 जुलाई 1981 को हुआ। इनके पिता का नाम बाबू नंदेश्वर सिंह है। इन्होने कोई औपचारिक शिक्षा नहीं ग्रहण की, लेकिन ज्ञान की पिपासा और किसी भी बात को अपने नजरिये से देखने की इनकी प्रवृति बचपन से ही रही है। शादी के बाद इनकी इस प्रवृति को जब इनके पति आशीष झा का संरक्षण मिला तो राजपरिवार में पलने-बढ़ने वाली यह महिला एक सशक्त महिला पत्रकार के रूप में उभरकर सामने आयी।

एक पत्रकार के रूप में बेबाक और दो टूक लिखने वाली कुमुद सिंह सामान्य जीवन में काफी मृदुभाषी, मिलनसार और आतिथ्य-सत्कार-प्रेमी महिला हैं।

जनसरोकार से जुड़ी बात उठाने में माहिर

"मैथिली भाषा के पहले ई-पेपर 'ईसमाद' की संपादक कुमुद सिंह की इंटरनेट वर्ल्ड में मजबूत पहचान है। तेज़ तर्रार तेवर की कुमुद सिंह शंकरपुर इस्टेट से ताल्लुक रखती हैं, जो देश के बड़े राजघराने में शामिल दरभंगा राज परिवार की एक शाखा है। फेसबुक पर उन्हें देश के बड़े-बड़े पत्रकार, नौकरशाह और राजनेता फॉलो करते हैं। वे एक ओर सत्ता और समाजिक कुरीतियों पर तीखे प्रहार करती हैं, वहीं देश की राजनीति, दरभंगा राजघराने और सामाजिक मुद्दों पर बेबाक राय रखती हैं। संबंधित विषय पर उनका रिसर्च मजबूत और तर्क अकाट्य होता है।"

25

सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में कुमुद सिंह "शक्ति" कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

सशक्त महिलाएं

डॉ. शिखा रानी

बहुआयामी प्रतिभा की धनी

जिंदगी के सफर में यूं तो हर कोई कुछ न कुछ छोटा या बड़ा करने का प्रयास करता है। परन्तु चर्चा उसकी होती है जो दूसरों के लिए जीता है। डॉ शिखा रानी यूं तो पेशे से डॉक्टर है और पटना मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में सिनियर रेजिडेंट के पद पर कार्यरत हैं। लेकिन उनकी एक बड़ी पहचान लेखिका, समाजिक कार्यकर्ता और मजबूत इरादों की नारी शक्ति के तौर पर है।

बिहार के एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मी शिखा वर्तमान में विभिन्न तरह के उत्पीड़न झेल चुकी महिलाओं में आत्मविश्वास जगाने का कार्य कर रही है। वे राज्य के सूदूर क्षेत्रों में यात्रा करती है, किसी भी तरह के उत्पीड़न की शिकार रही महिलाओं से मिलना, उनके संघर्षो को सुनने समझने के साथ ही उन्हें मानसिक संबल और न्यायिक सहायता दोनों पहुंचाने का कार्य कर रही है। डॉ. शिखा तीन जिलों में मेडिकल आफिसर भी रहीं हैं, और जहां भी रही है उन्होंने बदलाव की बयार लाने की कोशिश की है। उन्होंने पदस्थापना के दौरान एक ओर उन क्षेत्रों में महिला स्वास्थय और सशक्तिकरण वहीं दुसरी ओर कुपोषण , नेत्र चिकित्सा और नार्मल डिलीवरी अवेयरनेस को लेकर बेहतर काम किया।

नवोदय विद्यालय से बारहवीं की परीक्षा पास करने के बाद उन्होंने कोलकाता मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस किया। वे रेडियो डायग्नोसिस में एमडी है। इनके कई रिसर्च देश विदेश के नामी जर्नल में छप चुके हैं। महिलाओं के संघर्ष को सामने लाने के लिए वे सच्ची घटनाओं पर आधारित एक किताब लिख रही हैं , जिसमें 50 से ज्यादा वैसी महिलाओं की कहानी है जिन्होंने संघर्ष पर सफलता पाई है। इनका मानना है यह किताब अन्य महिलाओं , नारी शक्ति के लिए प्रेरणास्रोत होगी। डॉ शिखा समाज में सकारात्मक मुहिम चलाने के साथ ही शिक्षा दान का कार्य भी करती है। वे जहां भी रही है , वहां के आसपास के गरीब और वंचित बच्चों को समुह में इकट्ठा कर उनको शिक्षित करने और योग्य बनाने के लिए भी प्रयासरत रहती है। डॉ शिखा का बहुआयामी प्रयास उन्हे एक सशक्त महिला के तौर पर स्थापित करता है।

25

सशक्त महिला 2020 के फेम इंडिया - एशिया पोस्ट सर्वे में डॉ. शिखा रानी "लगनशील" कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

आस्था

देश के हिन्दू तीर्थ स्थलों में बिहार के मधुबनी जिला मुख्यालय के निकट मंगरौनी गांव स्थित एकादश रुद्र महादेव का अलग ही महत्व है। ये महत्व इसलिये भी बढ़ जाता है कि यह अपने आप में दुनिया में अनोखी जगह है, जहां एक साथ शिव के विभिन्न रूपों 11 शिवलिंगों का दर्शन व पूजन का अवसर मिलता है। यहां शिव 11 रूपों महादेव, शिव, रुद्र, शंकर, नील लोहित, ईशान, विजय, भीम देवदेवा, भदोद्भव एवं कपालिश्च के दर्शन का सौभाग्य शिव भक्तों को विशेष तौर पर मिलता है।

मधुबनी में स्थापित है एकादश रुद्र महादेव का दुर्लभ मंदिर

इसके अलावा इस एकादश रुद्र मंदिर परिसर में विष्णु के विभिन्न अवतारों, श्री विद्या यंत्र, विष्णुपद गया क्षेत्र, महाकाल, महाकाली, गणेश सरस्वती आदि साथ ही आम एवं महुआ का आलिंगन-बद्ध वृक्ष, भगवान शिव, पार्वती, महा-लक्ष्मी, महा-सरस्वती यंत्र, विष्णु-पादुका आदि के भी दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होता है।

इस परिसर स्थित पीपल वृक्ष का भी तांत्रिक महत्तम अलग ही है। कहते हैं कि इसके स्पर्श मात्र से भूत प्रेत के प्रभाव से लोगों को मुक्ति मिल जाती है। वहीं श्री विद्या यंत्र के दर्शन व पूजन से लक्ष्मी एवं सरस्वती दोनों की कृपा बनी रहती है।

सोमवार के दिन यहां भंडारे का आयोजन किया जाता है, इस दिन यहां रुद्राभिषेक एवं षोडषोपचार पूजन करते हैं तो उनकी इच्छित मनोकामनाएं निश्चित रूप से पूरी होती हैं। पंडित जी बताते हैं कि यहां एक ही शक्ति-वेदी पर स्थापित शिव के सभी एकादश रुद्र लिंग रूपों में 10 मई से 21 मई 2000 ई. के बीच विभिन्न तरह की आकृतियां उभर आयीं।

1 महादेव – विगत 30 जुलाई 2001 को अर्द्ध-नारीश्वर का रूप प्रकट हुआ है। कामाख्या माई का ये भव्य रूप है। पांचवें सोमवारी के दिन गणेश जी गर्भ में प्रकट हुए। शिवलिंग पर ये रूप स्पष्ट नजर आती है।

2 शिव – प्रभु श्री राम ने कहा था कि मैं ही शिव हूं। इस लिंग में सिंहासन का चित्र उभरा है, जो प्रभु श्री राम का सिंहासन दर्शाता है।

3 रुद्र – भय को हराने वाले इस लिंग में बजरंगबली पहाड़ लेकर उड़ रहे है बड़ा ही अद्भुत चित्र प्रकट हुआ है।

4 शंकर – गीता के दसवें अध्याय में श्री कृष्ण ने कहा है कि मैं ही शंकर हूं। इस लिंग में श्री कृष्ण का सुदर्शन चक्र, बांसुरी और बाजूबंध स्पष्ट दृष्टिकोण होता है।

5 नील लोहित– जब महादेव ने विषपान किया था, तब उनका नाम नील लोहित पड़ गया था। इस लिंग में सांप एवं ॐ का अक्षर प्रकट हुआ है।

6 ईशान – हिमालय पर निवास करने वाले महादेव जिसे केदारनाथ कहते हैं विगत नौ जुलाई 2001 सावन के पहले सोमवार को राजराजेश्वरी का रूप प्रकट हुआ।

7 विजय – इस शिवलिंग में छवि बन रही है जिस कारण आकृति अस्पष्ट है।

8 भीम – महादेव का एक रूप भी है। इस शिवलिंग में गदा की छवि उभर कर सामने आयी है। गदा का डंडा अभी धीरे-धीरे प्रकट हो रहा है।

9 देवादेव – ये लिंग सूर्य का रूप है। इस शिवलिंग में गदा के नीचे दो भागों से सूर्य की किरणें फूटकर शीर्ष में मिल रही है।

10 भवोद्भव – इस लिंग में उमा शंकर की आकृति प्रकट हुई है। दोनों आकृतियां धीरे-धीरे बढ़ रही है।

11 कपालिश्च– महादेव का एक रूप बजरंगबली है। बजरंगबली ब्रह्मचारी थे, इसलिये संभवतः इस लिंग में कोई चित्र नहीं उभर रहा है। किसी दिन ये शिवलिंग अपने आप पूरा लाल हो जायेगा।

कांची पीठ के शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती, बिहार राज्य धार्मिक न्यास बोर्ड के अध्यक्ष आचार्य किशोर कुणाल व अधीक्षण पुरातत्व-विद डॉ। फणीकांत मिश्र आदि आये तो यहां शिव के एकादश रुद्र का अलौकिक रूप देख भाव विह्वल हो गये। उन्होंने कहा कि ये अपने आप में धार्मिक दृष्टिकोण से अद्वितीय पूजन व तीर्थ स्थल है।

बाबा जी का कहना है कि सभी शिव भक्तों को मात्र एक बार आकर इन शिवलिंगों उभरी हुई आकृतियों को देखे तो पता लगेगा कि ऐसे शिवलिंग विश्व में कहीं भी नहीं हैं

गौरतलब है कि प्रसिद्ध तांत्रिक पंडित मुनीश्वर झा ने 1953 ई. में यहां शिव मंदिर की स्थापना की थी। इस मंदिर में स्थापित सभी शिवलिंग काले ग्रेनाइट पत्थर के बने हुए हैं जिनका प्रत्येक सोमवार शाम को दूध, दही, घी, मधु, पंचामृत, चंदन आदि से स्नान होता है। श्रृंगार के लिये विशेष तौर पर कोलकाता से कमल के फूल मंगाये जाते हैं। प्रधान पुजारी कहते हैं कि जो व्यक्ति अपने पितरों का पिंडदान करने नहीं गया नहीं जा पाते उनके लिये यहां गया क्षेत्र बना है जहां पिण्डदान कर मुक्ति पायी जाती है।

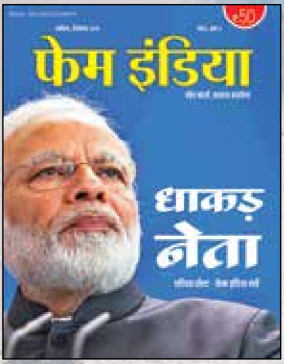

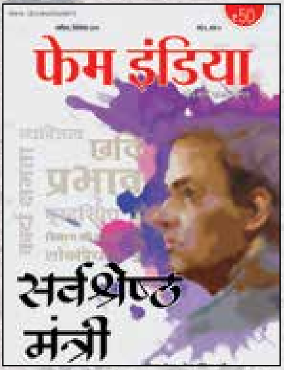

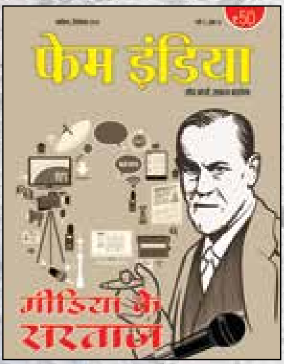

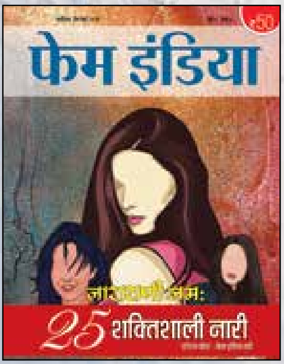

फेम इंडिया के बढ़ते कदम ...
सफलता के 8 वर्ष ....

FAME INDIA

सोच बदलें, समाज बदलेगा

सदस्यता फार्म

मैं फेम इंडिया की सदस्यता ले रहा / रही हूं

श्रीमती/ कुमारी/ श्री ....

पताः ....

.... राज्य ....

फोन (निवास) .... मोबाइल ....

ई-मेल ....

कृपया .... के नाम .... का डी डी

या चेक नं. ....

बैंक का नाम ....

चैक फेम इंडिया के नाम पर देय होगा

दिल्ली के बाहर से भेजे गए चेक में कृपया 30 रूपया अधिक भेजें

कृपया इस फार्म को भरकर डी डी या चेक के साथ हमें इस पते पर भेजें

फेम इंडिया

फेम इंडिया पब्लिकेशन प्रा.लि. 762, F- 8, सेक्टर 50, नोएडा 201304 (उ.प्र .)

फोन नं. 09711535422

ई मेल-ई मेल- info.fameindia.co

अवधि	अंको की संख्या	कवर मूल्य	सब्सक्रिप्शन मूल्य	बचत
1 वर्ष	12	600	500	100
2 वर्ष	24	1200	1000	200
3 वर्ष	36	1800	1500	300

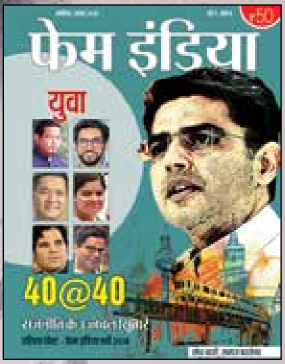

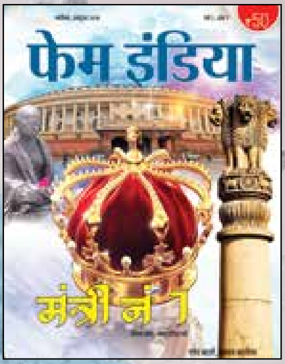

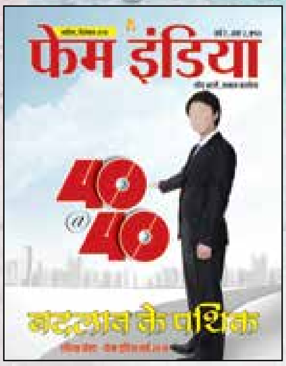

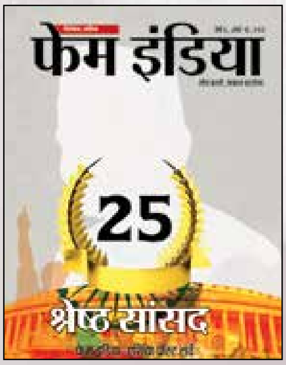

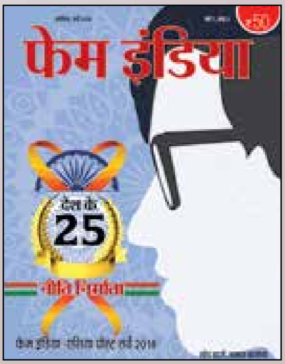

POWERFUL. AGILE.
INTELLIGENT.
THE ALL-NEW BMW 5 SERIES. BUSINESS ATHLETE.
M BB4102
Sheer
Driving Pleasure